IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 8, June 2025
Impact Factor: 7.67

उच्च शिक्षा में उपनिषदीय शिक्षा दर्शन ''धर्ममचर'' अर्थात् धर्म का आचरण करो।

डॉ. ज्योति जोशी
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर
संस्कृत विभागाध्यक्ष
एस.एस. जैन सुबोध गर्ल्स पी.जी. कॉलेज सांगानेर

सार– हमारे देश की शिक्षा का इतिहास ऋग्वेद काल से माना जाता हैं क्योंकि मंत्र हमारे तात्कालिक शिक्षा व्यवस्था को स्पष्ट करते हैं वैदिक काल से हमारी शिक्षा प्रकृति के माननीय रूप, प्रकृति की उपासना आदि सभी से भरी हुई हैं उस समय आत्मज्ञान पर बहुत बल दिया गया था। वैदिक साहित्य का एक बहुत बड़ा भाग उपनिषद् ही हैं हमारी वैदिक कालीन संस्कृति का समृद्ध रूप उपनिषद् में ही देखने को मिलता है। उपनिषद् कालीन साहित्य में वैज्ञानिक, दार्शनिक, धार्मिक आदि सभी प्रकार के चिन्तन देखने को मिलते हैं।

वैदिक कालीन साहित्य में हमारे मनीषियों ने वृहद रूप से जो अनुभव प्राप्त किया जिसको व्यावहारिक रूप में लागू किया, वे सार रूप में दिये गये हैं। आज की तरह उस समय भी जीवन लक्ष्यों की प्राप्ति का एक बहुत बड़ा साधन शिक्षा को माना गया था। इसलिये ज्ञान राशि स्वरूप समस्त वेदों की सारभूत उपनिषद् संस्कृत वाङ्. मय की अनुपम धरोहर है।

शब्दकोष :– आत्मज्ञान, आध्यात्मिक, शिक्षावल्ली ज्ञान धारा, परमात्मा, उपनिषद्, एकाग्रता।

वेद यदि भारतीय संस्कृति के प्राण है तो उपनिषद् आत्मा है। मानवीय चिन्तन धारा की सर्वोत्कृष्ट अनुभूति सम्पन्न यह ग्रन्थ राशि न केवल भारत देश के लिये अनुपम ज्ञान निधि है, अपितु विदेशियों व विधर्मियों के लिये भी उदार विचारों का अपूर्व कोष है। उपनिषद् भाव और भाषा दोनों ही दृष्टियों से अनुपमेय है। मानव समाज चिरकाल से इनके अध्ययन से शांति प्राप्त करता आ रहा है। न केवल विद्वान व मनीषी अपितु साधारण जन भी इनके चिन्तावर्धक तथा विचारों के मालिन्य को दूर करने वाले विचारों से अपरचित नहीं है। श्री मैंक्समूलर, ने तो 'सर्वोत्कृष्ट मानव की ज्ञानधारा' उपनिषद् को कहा हैं मैक्डानल के शब्दों में ''मानवीय चिंतन के इतिहासों में सर्वप्रथम उपनिषद् में ब्रह्म की यथार्थ व्यंजना है। संसार के सम्पूर्ण ज्ञान का मूल उपनिषद् ही है।'' उपनिषद् शब्द 'उप तथा नि' उपसर्ग सद् धातु क्विप् प्रत्यय से निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है शिष्य गुरु के समीप

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 8, June 2025 Impact Factor: 7.67

बैठकर पढ़े। उपनिषद् वह रहस्यमय ब्रह्म विद्या है, जिसको गुरु के सम्पर्क में रहकर, एकान्त में सीखा जाता है। वास्तव में उपनिषद्, उच्च रीति से स्वाध्याय, मनन और अनुशीलन और व्यवहार से युक्त गूढ़ विद्या है जो मनुष्य को परम तत्व तक पहुँचाने का मार्ग दिखाती है। शिक्षा उपनिषदीय शिक्षा में तत्व मीमांसा जीवन की पूरी प्रक्रिया उद्देश्य पर आधारित होती है। हमारी आवश्यकताएं और आदेशों के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण होता है और यही कारण है कि हमारी शिक्षा के उद्देश्य जीवन के उद्देश्यों से जुड़े रहे हैं। उपनिषद् कालीन समाज में आध्यात्मिकता का बहुत महत्त्व था और इसके लिये व्यक्ति अपने जीवन में नैकिता और मूल्यों के अनुसार कार्य करता था।

यही कारण था कि उस समय की शिक्षा का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य आत्मज्ञान प्राप्त करना था। आत्मज्ञान की प्राप्ति आध्यात्मिक चिन्तन पर आधारित थी और इन सबका आधार आत्मा, परमात्मा, जीन मोक्ष, मुक्ति आदि माने जाते थे और यही माना जाता था कि जिसने इन सारे लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया उनका जीवन सफल हो गया। विभिन्न दर्शन का लक्ष्य उसी परम ब्रह्म की प्राप्ति था और सबाक लक्ष्य एक ही था। संसार के विविध दुखों आधिदैविक, आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक की आत्यन्तिक निवृत्ति ही सुख का आधार हैं इन त्रिविध दुखों के आत्त्यन्तिक नाश एवं अखण्ड आनन्द की प्राप्ति ही उपनिषदों का लक्ष्य हैं पूर्ण से ही पूर्ण की उत्पत्ति होती है अर्थात् कारण स्वरूप ब्रह्म की पूर्णतया से कार्यातमक पूर्ण ब्रह्म की उत्पत्ति होती है।

''ऊँ पूर्वमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णदुच्यते।''

उपनिषद् की तत्व मीमांसा– ईशादि नौ उपनिषद् जिसमें ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, ब्रहदाख्यक, छान्दोग्य उपनिषद् में कंठोपनिषद का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसका समुद्भव कृष्ण यजुर्वेद की कंठशाखा से हुआ है। इस उपनिषद् में ऋषि पुत्र नचिकेता और यम के ब्रह्म तत्व के ज्ञान का रहस्यमय, मनोरमणीय तथा उपयोगी संवाद है। ब्रह्मानन्द एवं भृगुवल्ली में विवेचित ब्रह्म विद्या के सम्प्रदाय प्रवर्तक वरुण हैं अतः इन्हें वारूणी विद्या से अभिहीत किया गया है और शिक्षावल्लियों का संबंध संहिताओं से हैं जिसका नाम संहितोपनिषद् रखना उचित है।

आत्मा परमात्मा– विद्या की प्राप्ति के लिए चित्त की शुद्धता, सम्पूर्ण विषयी भोगों से दूर एकाग्रचित्तता तथा गुरुकृपा परम आवश्यक हैं अतः उपनिषदों की शिक्षा वल्लियों में चित्त की शुद्धता एवं एकाग्रता के लिये शिष्य और आचार्य के लिये कुछ उपास्य विधियों तथा शिष्टाचारों का प्रतिपादन मिलता है। साथ–साथ गुरु–शिष्य सम्बद्ध व्यवहारों का भी वर्णन दृष्टिगोचर होता हैं कंठोउपनिषद् में आगे वर्णन मिलता है कि वाणी से मन, मन से बुद्धि, बुद्धि से आत्मा तथा आत्मा से परमत्मा की सीढ़ी से ही परम तत्व को जाना जा सकता है। इनकी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 8, June 2025 Impact Factor: 7.67

महत्ता का यही क्रम बताया गया हैं आत्मा अजर और अमर हैं शरीर के मारे जाने पर भी नहीं मरता है। सांसारिक व्यक्तियों में हमें विषयी और विषय का परस्पर संयोग मिलता हैं आत्मा के अस्तित्व के इस प्रतिपादन के आधार पर और उपनिषदों की अनृर्दृष्टि के समर्थन द्वारा कि आत्मा अथवा निर्मल ज्ञाता हमारे शरीर को मिट्टी में मिल जाने पर भी अछुता अथवा अप्रभावित बचा रह जाता है। उपनिषदों में आत्मा और परमात्मा का प्रतिपादन हुआ है। क्षणिक सत्तावाली इन्द्रियों और शरीर को पीछे आत्मा है। संसार के क्षणिक पदार्थों की पृष्ठभूमि में ब्रह्मा हैं दोनों एक ही हैं क्योंकि दोनों का स्वभाव एक समान हैं मनुष्य एवं प्रकृति में निवास करते हुये भी सर्वोपरि ब्रह्म दोनों से महान है। अनन्त विश्व, अनन्त देश और काल से बल्द उसी ब्रह्म में अवस्थित है, न कि ब्रह्म इसमें। ईश्वर की अभिव्यक्ति में परिवर्तन हो सकता है, किन्तु उसके अंदर अंश एक है जो आत्म स्वरूप हैं और प्रतितिरूप परिवर्तनों की पृष्ठभूमि है। उपनिषद् के शिक्षा दर्शन में शिक्षक शिक्षार्थी कठोपनिषद् के प्रारमेा में शिक्षक–शिक्षार्थी के संबंध के संदर्भ में वर्णित है कि शिष्य एवं शिक्षक दोनों एक साथ एक दूसरे की रक्षा करें। एक दूसरे के नैतिक विकास में सहायक हो। साथ–साथ उपभोग करें अर्थात् ज्ञान की वृद्धि साथ–साथ होती रहे। एक दूसरे की शौर्य वृद्धि करें। तेजस्वी बने, एक दूसरे की उन्नति से ईर्ष्या नहीं करें। उपनिषदों में विद्यार्थी की कल्पना उस ज्ञान पिपासु की है, जिसमें ज्ञान प्राप्त करने की उत्कृष्ट अभिलाषा हैं तथा जो ज्ञान पिपासा की तृप्ति के लिये किसी योग्य गुरु की तलाश करता है। शिक्षा ग्रहण करने के लिये किसी आयु की कोई सीमा नहीं होती है। जीवन की किसी अवस्था में ज्ञान पिपासा जागृत हो सकती है। ज्ञान प्राप्ति का कोई समय निश्चित नहीं है। छात्रा के मन में शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा उत्पन्न होनी चाहिए। ज्ञान अनन्त शक्ति का स्त्रोता होता है। शिक्षक की यह स्वायत्ता हैं कि वह जिसे चाहे उसे शिष्य के रूप में स्वीकार करें और जिसे योग्य न समझे उसे स्वीकार न करें। विद्यार्थी से गुरु के प्रति समर्थन भाव की अपेक्षा की गयी है। शिष्य आत्म ज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने के लिये गुरु के समीप उपस्थित होता है। छात्र की शैक्षिक पृष्ठभूमि जानने के बाद अध्यापक यह निर्णय लेता है कि उक्त व्यक्ति शिष्य बनने के लायक है या नहीं। शिक्षा आरम्भ होने का प्रथम चरण तब प्रारम्भ होता है जब गुरु उसे बाह्य जगत का अध्ययन करने के लिये आदेश देता है– सर्वं खल ईदं ब्रह्म। दूसरे चरण में अध्यापक अध्येता को ब्रह्म के साथ उसके तादात्म्य की बात समझाता है।

अध्यापक के निर्देशों का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों ही रूपों से पालन होता है। अंतिम चरण 'सोऽहम' अर्थात् मैं ब्रह्म हूँ का है। इस स्थिति में आत्मज्ञान की प्राप्ति हो जाती है तथा व्यक्तित्व का इस प्रकार रूपान्तरण हो जाता है कि गुण सहज हो जाते है। सभी प्रकार की दुविधाएँ समाप्त हो जाती हैं और जीवन का अंतिम लक्ष्य जिसे आनन्द का जाता है, प्राप्त हो जाता है। आत्मोन्नति की इस सम्पूर्ण भूमिका में शिक्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

सक्षेप में उपनिषद् भारतीय प्रदर्श के मूल स्त्रोत है। बिना उपनिषदों के भारतीय सांस्कृतिक परम्परा व भातीय मनीषा की कल्पना नहीं की जा सकती है। इसके सिद्धान्तों ने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास में

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 8, June 2025 Impact Factor: 7.67

महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उपनिषदों के ज्ञान का अध्ययन आज भी प्रासंगिक है और यह हमें एक बेहतर समाज बनाने में मदद कर सकता हैं उपनिषदों में सन्निहित ज्ञान के कारण ही भारत को समस्त विश्व ने जगद्गुरु स्वीकार किया था। बृहदारण्यक उपनिषद में मानवता के लिये अद्वितीय संदेश आधुनिक युग में अधिक प्रांसगिक प्रतीत होता है।

असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्माऽमृतगमय।

संदर्भः–

1. वैदिक साहित्य का इतिहास– डॉ. देवेन्द्र नाथ पाण्डेय, पं. सं. 7
2. वेद दिग्दर्शन– पं. माधवाचार्य शास्त्री, पृ. सं. 179
3. वैदिक साहित्य का इतिहास– डॉ. कर्ण सिंह।
4. वैदिक साहित्य का इतिहास– डॉ. राममूर्ति शर्मा पृ. सं. 142
5. छान्दोग्योपनिषद– 3/5/2
6. कंठोपनिषद्– 3/17
7. ईशावस्योपनिषद्– शांतिपाठ
8. श्रीमद्भगवतगीता – 2 अध्याय/20, 23 श्लोक